स्त्री का मार्ग : भाव
पुरुष का मार्ग : ध्यान

पुरुष तो सोचता है बुद्धि से, स्त्री जीती है हृदय से। और जितने कारागृह निर्मित होते हैं, उनमें से निन्यानबे प्रतिशत हृदय से निर्मित होते हैं, एक प्रतिशत बुद्धि से निर्मित होते हैं। और बुद्धि को तो समझाया भी जा सकता है कि सचेत हो जाओ, हृदय सुनता ही नहीं।

बुद्ध ने बहुत वर्षों तक स्त्रियों को संघ में प्रवेश नहीं दिया; सख्त रहे। उन्होंने कहा : 'स्त्रियों को दीक्षा मैं न दूंगा।' संघ मूलतः पुरुषों का रहा। लेकिन यह बात बड़ी बेचैनी की हो गई। स्त्रियां आधी हैं, आधा जगत उनका है। और स्त्रियों ने बार-बार निवेदन किया। लेकिन बुद्ध सख्त रहे। फिर कृषा गौतमी ने निवेदन किया।

एक दिन कृषा गौतमी निवदेन लेकर आई—रोती थी, चीखती थी, चिल्लाती थी। उसने कहा, 'यह कैसी बात है कि मोक्ष का द्वार सिर्फ पुरुषों के लिए खुला है! हम स्त्रियों का क्या कसूर है?'

आनंद को बहुत दया आ गई और आनंद ने बुद्ध से कहा, 'अब बहुत हो गया; स्त्रियों को भी आज्ञा देनी ही पड़ेगी।' और बुद्ध झुके और उन्होंने स्त्रियों को आज्ञा दी कि वे संघ में सम्मिलित हो जायें, उनकी भी दीक्षा होगी। लेकिन उन्होंने कहा, 'मैं तुम्हें सावधान किये देता हूं; मेरा धर्म जो पांच हजार साल तक चलता, अब पांच सौ साल तक ही चलेगा। तुम नहीं मानते, तो स्त्रियों को मैं आज्ञा देता हूं। लेकिन जो प्रकिया पांच हजार साल तक शुद्ध रहती, अब वह केवल पांच सौ साल तक शुद्ध रहेगी। इसके बहुत अर्थ निकाले गये हैं। बुद्ध ने इससे ज्यादा कुछ संबंध में कहा नहीं। लेकिन आज इस कहानी के संदर्भ में एक अर्थ समझ लेने जैसा है। स्त्रियों को रोकने का केवल एक ही कारण था—गहरे में, कि स्त्रियों को मोह में गिरने से बचाना बहुत मुश्किल है। वे बुद्ध का ही कारागृह बना लेंगी—पुरुषों से ज्यादा जल्दी। कारागृह बनाने में स्त्रियां पुरुषों से ज्यादा कुशल हैं। क्योंकि स्त्री-जीवन का ढंग तर्क का कम और प्रेम का ज्यादा है। और प्रेम की ऊंचाई तक पहुंचाना तो बहुत मुश्किल है, राग की नीचाई तक गिर जाना बहुत आसान है। पुरुष तो सोचता है बुद्धि से, स्त्री जीती है हृदय से। और जितने कारागृह निर्मित होते हैं, उनमें से निन्यानबे प्रतिशत हृदय से निर्मित होते हैं, एक प्रतिशत बुद्धि से निर्मित होते हैं। और बुद्धि को तो समझाया भी जा सकता है कि सचेत हो जाओ, हृदय सुनता ही नहीं। स्त्री की जो जीवन प्रक्रिया है, पहुंचने का जो ढंग है, किसी बात को समझने की जो उसकी व्यवस्था है, वह रागात्मक है। और बुद्ध का पूरा का पूरा धर्म—विराग है। बुद्ध के धर्म में राग के लिए कोई जगह नहीं है, क्योंकि राग कारागृह बन जायेगा। राग के भी धर्म हैं, जिन्होंने राग को इतना शुद्ध किया है कि वह प्रेम बन जाये—जैसे कृष्ण का, मीरा का, चैतन्य का। अगर ठीक से समझा जाये तो चैतन्य, मीरा और कृष्ण के धर्म में जब भी कोई पुरुष-चित्त प्रवेश करेगा, तभी वह परंपरा अशुद्ध हो जायेगी। क्योंकि जहां राग को ही शुद्ध करना है और प्रेम की ऊंचाई तक ले जाना है, वहां पुरुष बड़ी मुश्किल में पड़ जायेगा।

प्रेम की ऊंचाई पाना पुरुष को बड़ा कठिन है। कारागृह तोड़ना बहुत आसान है—पुरुष के लिए। लेकिन कारागृह को इस ऊंचाई तक ले जाना कि वह मंदिर हो जाये, बहुत मुश्किल है। बुद्ध का धर्म मौलिक

अर्थों में पुरुष का धर्म है। और इसलिए वे रोकते रहे कि स्त्री को मत आने दो। क्योंकि उसे समझाना मुश्किल होगा और उससे यह कहना तो बिलकुल ही कठिन हो जायेगा कि बुद्ध के राग में मत पड़ना। वह तो बुद्ध के पास राग में पड़कर ही आयेगी। इधर मैं निरंतर अनुभव करता हूं : जब भी कोई पुरुष मेरे पास आता है दीक्षित होने—संन्यास में, ध्यान में, किसी अंतर्यात्रा पर निकलने, तो वह मेरी बातों से प्रभावित होकर आता है। वह कहता है : 'आपकी बातें ठीक लगती हैं।' जब भी कोई स्त्री आती है, वह कहती है : 'आप ठीक लगते हैं।' यह 'आप ठीक लगना' खतरनाक है।

स्त्री को मेरी बात ठीक लगती है, क्योंकि मैं ठीक लगता हूं। पुरुष को मैं ठीक लगता हूं, क्योंकि मेरी बातें ठीक लगती हैं। दोनों बातों में बड़ा बुनियादी भेद है। पुरुष को मैं ठीक लगूंगा, अगर मेरी बात ठीक लगती है; लेकिन मैं गौण हूं। जिस दिन मेरी बात ठीक नहीं लगेगी, उसी दिन मैं गैर-ठीक हो जाऊंगा। आधार मेरी बात पर है। संबंध बुद्धि का है।

स्त्री को पहले से मैं ठीक लगता हूं। मैं ठीक लगता हूं, इसलिए मेरी बातें ठीक लगती हैं। इसलिए आप किसी स्त्री को, मैं क्या कहता हूं—उस संबंध में कितना ही खंडन करें—उसे बदल नहीं सकते, क्योंकि तर्क से उसका कोई संबंध ही नहीं है। कितना ही तर्क दें कि मेरी बातें गलत हैं, किसी स्त्री को आप नहीं बदल सकते। क्योंकि इसको उसने आधार ही नहीं बनाया है। यह उसके संबंध का सूत्र ही नहीं है। जिस दिन मैं गलत हो जाऊंगा उस दिन मेरी बातें भी गलत हो जायेंगी।

स्त्री का संबंध हार्दिक है, बौद्धिक नहीं है। संबंध राग का है, विचार का नहीं है। इसलिए बुद्ध ने कहा कि स्त्रियों को जितनी देर रोका जा सके, ठीक है। दुनिया में दो ही तरह के धर्म हैं। एक धर्म है जो मूल रूप से स्त्रैण है; मीरा और चैतन्य, सूफी, वैष्णव—स्त्रैण हैं। इनका मूल स्रोत स्त्री है। पुरुष गौण है। और पुरुष अगर आता भी है, तो उसको स्त्रैण होकर भी आना पड़ेगा।

एक संप्रदाय भारत में रहा—अनूठा। ऐसा संप्रदाय दुनिया में कहीं पैदा नहीं हुआ। उस संप्रदाय का नाम है : सखी-संप्रदाय। बंगाल में अभी भी उसको मानने वालों का एक वर्ग है। लेकिन वे इतने संकोच से भर गए हैं कि वे जाहिर नहीं कर सकते कि वे सखी-संप्रदाय को मानते हैं। क्योंकि लोग हंसते हैं। सखी-संप्रदाय में पुरुष भी अपने को स्त्री मानता है, कृष्ण की सखी मानता है। और रात सोता है तो कृष्ण की मूर्ति अपनी छाती से लगाकर सोता है। पुरुषों को समझना बहुत कठिन हो जायेगा। यह बात ही बेहूदी लगेगी। लेकिन सखी-संप्रदाय से भी लोग ज्ञान को उपलब्ध हुए हैं। उन्होंने वहां से भी परम शिखर छुआ है।

इसे थोड़ा सोचो कि पुरुष को इतना स्त्रैण मान ले तो उसका अंहकार तो खो ही जायेगा। और यह भाव इतना गहरा जा सकता है कि—ऐसा कहा जाता है कि रामकृष्ण ने जब सखी-संप्रदाय की साधना की तो उन्हें मासिक-धर्म शुरू हो गया। यह ऐतिहासिक तथ्य है। उनक स्तन बड़े हो गये। और उनकी चाल स्त्रैण हो गई। छः महीने तक वे सखी-संप्रदाय की साधना करते थे, तो वे चलते थे, तो जैसे स्त्री चलती है। बैठते तो स्त्री के ढंग से। उनकी आवाज बदल गई। और यह तो बहुत गहरा बायोलॉजिकल, जैविक चमत्कार घटित हुआ कि उनको मासिक-धर्म शुरू हो गया। जब उन्होंने सखी-संप्रदाय की साधना पूरी कर ली तो कोई साल भर तक स्त्रैण लक्षण उनके ऊपर जारी रहे। भाव इतना गहरा हो सकता है कि क्रांति ले आये। पर इतना गहरा होना चाहिए कि तुम बचो ही न, भाव ही रह जाये। तब कारागृह नहीं बनेगा। इसे समझ लें, क्योंकि बारीक है। दो चीजें चाहिए कारागृह के बनने के लिए : तुम चाहिए, अहंकार चाहिए। अगर जंजीरें अकेली हों और तुम न हो, तो भी कारागृह नहीं हो सकता, क्योंकि बंधेगा कौन? या तुम हो और जंजीरें न हों तो भी कारागृह नहीं होगा, क्योंकि बांधेगा कौन? बुद्ध और महावीर के धर्म कहते हैं : तुम तो रहो, कारागृह न रहे। इसलिए जहां भी तुम्हें कारागृह का डर पैदा हो कि यहां कारागृह बन सकता है, रोग जन्मता है, राग जन्मता है—वहां से हट जाना। बुद्ध पुरुषों से भी सावधान रहना। क्योंकि उनका प्रबल आकर्षण है, महा-आकर्षण है। वे मैग्नेटिक फोर्सेज हैं। उनसे बचना, अन्यथा तुम बह जाओगे—उनके प्रवाह में; तुम एक तिनके हो जाओगे—उनकी बाढ़ में। कृष्ण, मीरा और चैतन्य की परंपरा कहती है कि तुम भाव में इतने डूब जाना कि तुम बचो ही न। फिर जंजीरें किसको बांधेंगी। बांधने दो कृष्ण को, कौन बांधेगा? वे भी पहुंच जाते हैं।

—ओशो

सहज समाधि भली

प्रवचन नं. 10 से संकलित

(पूरा प्रवचन टेप पर भी उपलब्ध है)